साल 2014, तारीख 19 अक्टूबर, दिन रविवार और समय सुबह के 10:00 बजे का ...

और स्थान हरिद्वार से कुछ पहले हरिद्वार - बिजनौर रोड पर स्थित 5 स्टार होटल वालिया(काल्पनिक नाम)

इसी होटल के एक वीआईपी रूम में ठहरा हुआ था गायत्री ग्रुप ऑफ कम्पनीज की मालकिन गायत्री देवी का इकलौता बेटा और इस करोड़ो के कारोबार का इकलौता वारिस -अनिमेष सिंह !

उसके साथ ही उसका ड्राइवर मनोज भी इसी होटल के एक अन्य रूम में ठहरा हुआ था ।जो कि एक 25-26 साल का, मध्यम कद-काठी का लड़का था ।

जबकि अनिमेष एक 24 वर्षीय, गोरा, लंबा, खूबसूरत नौजवान था जिसकी आंखे ब्राउन कलर की थीं और जो देखने में बिल्कुल किसी फ़िल्मी हीरो जैसा आकर्षक लगता था और उसके बाल भी बहुत स्टाइल से मांग निकाल कर

कढ़े हुए थे। उसने अपने शरीर पर उस
समय क्रीम कलर का एक कीमती सूट पहना हुआ था और वह इस समय बिल्कुल किसी राजकुमार की तरह लग रहा था ।

अनिमेष अभी अपने रूम में ही डाइनिंग टेबल पर बैठा हुआ नाश्ता कर रहा था। उसके रूम का दरवाजा भी तब हल्का सा खुला हुआ था की

तभी उसका ड्राइवर मनोज, उस खुले दरवाजे से अंदर झांकते हुए बोला- " मे आई कम इन सर ?"

नाश्ता करते अनिमेष ने सामने नजर उठाकर दरवाजे से झांकते मनोज की ओर देखा और
मस्ती भरे स्वर में बोला " आ जाओ मनोज डिअर !"

मनोज दरवाजा खोल कर अंदर आ गया और सीधे नाश्ता करते अनिमेष के सामने जाकर खड़ा हो गया, और उसका अभिवादन करते हुए बोला- " गुड मॉर्निंग सर ! "

'गुड मॉर्निंग मनोज डियर ! " अनिमेष ने उसकी तरफ देखते हुए कहा- "आओ बैठो ! नाश्ता कर लो !

नहीं सर ! मैं अभी बस नाश्ता करके ही आ रहा हूँ ! "

अनिमेष ने फिर से कहा- " अरे तो और ले लो यार ! "

" नहीं सर ! आप लीजिये ! " मनोज ने फिर से मना करने के बाद आगे पूछा - " आज तो घर चलना है ना सर ? "

"घर ?"

"हाँ आप कल कह रहे थे ना यहाँ का काम खत्म हो गया है!"

" हां मनोज डिअर ! काम तो खत्म हो गया है मगर अभी घर नहीं चलना है! "

अनिमेष ने कुछ सोचते हुए कहा तो मनोज ने आगे पूछा- " तो फिर आज कहां चलना है सर ?

अनिमेष ने नाश्ता करते हुए ही जबाब दिया- " देहरादून!"

" देहरादून ? "

मनोज ने चौकते हुए पूछा तो अनिमेष ने कन्फर्म करते हुए कहा - " हां मनोज डिअर आज हमे देहरादून ही चलना है !"

" ठीक है सर ! " मनोज ने कहा और फिर कुछ सोचते हुए पूछा- " वहां से आज ही लौट आयेंगे ना सर ?"

" नहीं ! आज तो लौटना मुश्किल है !"

अनिमेष की यह बात सुनकर मनोज के चेहरे पर कुछ परेशानी के भाव उभर आये जिन्हें देखकर अनिमेष ने उससे पूछा- " क्यों मनोज डिअर ? क्या हुआ ? ऐनी प्रॉब्लम ? कुछ नहीं कुछ नहीं सर ! "

"कुछ नही ?तो फिर इतना परेशान क्यों लग रहे हो? कोई परेशानी हो तो बोलो ना !"

अनिमेष ने पूछा तो मनोज ने कुछ झिझकते हुए कहा - " व-

वो क्या है सर कि दीपावाली आ रही है और म-मैंने घर पर बोला हुआ था आज-कल में आने के लिए ।"

"ओह ! अच्छा तो यह बात है! " अनिमेष ने एक पल के लिए सोचा और फिर कहा- "ठीक है तो कोई बात नहीं! तुम आज ही घर चले जाओ! देहरादून मैं खुद ड्राइव करके चला जाऊंगा !"

"मगर सर."

" अरे कोई बात नहीं है मनोज डिअर ! " अनिमेष ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा - " मैं आराम से खुद ड्राइव करके चला जाऊंगा, तुम यहीं से अपने घर चले जाओ!"

" मगर सर ! मैडम जी कहीं नाराज तो नहीं हो जायेंगी ? "

" कौन मम्मी ? अरे नहीं यार! उन्हें मैं समझा दूंगा! तुम बेफिक्र होकर जाओ ! "

"" ठीक है सर ! मैं फिर यहीं से बिजनौर के लिए बस पकड़

लूँगा ! "

"अरे यहाँ पता नहीं रुके ना रुके ! " अनिमेष ने कुछ सोचते हुए कहा- " तुम एक कम करो ! अभी मेरे साथ ही चलना, फिर तुम हरिद्वार से ही बस पकड़कर अपने घर चले जाना और मैं वहाँ से आगे देहरादून निकल लूँगा !"

"ठीक सर ! मैं फिर बाहर आपका इंतज़ार करता हूँ !"

मनोज ने कहा तो अनिमेष बोला " अरे यहीं बैठ जाओ ना यार ! क्यों इतनी फॉर्मेलिटी करते हो! बस अभी चाय पीकर चल रहें हैं !"

"ठीक है सर ! " और फिर मनोज वहीं, उस रूम में ही एक खाली कुर्सी पर बैठ गया।

अनिमेष अब आराम से बैठा हुआ चाय पीने लगा।

थोड़ी देर के बाद मनोज ने धीरे से फिर कहा- " सर ! एक बात और थी ! "

" हां बोलो डिअर ! "

'मुझे कुछ एडवांस चाहिए था ! "

"अरे हां हां बोलो ना डिअर ! कितने रुपये चाहिए ? "

"6 हजार !"

मनोज ने कुछ सोचते हुए कहा तो अनिमेष ने तुरंत कहा- " हां हां तो ले जाओ ना यार ! जरा मेरे उस बैग को उठाओ!"

अनिमेष ने वहीं बेड के पास एक टेबल पर रखे बैग की ओर संकेत करके कहा तो मनोज फौरन वह बैग उठाकर अनिमेष के पास ले आया, और अनिमेष ने उस बैग में से 7 हजार रुपये निकाल कर उसे दे दिए ।

रुपये लेकर उसे गिनने के बाद मनोज ने चौंकते हुए कहा- "

सर ! ये तो 7 हजार हैं! "

" हां तो रख लो ना डिअर ! " अनिमेष ने बेफिक्री से कहा - " दीपावाली का त्यौहार है, खूब खुल कर त्यौहार मनाना ! "

" ठीक है सर! मैं ये रुपये अपनी सैलरी में से कटवा दूंगा!"

मनोज ने कहा तो अनिमेष तुरंत मना करते हुए बोला - " अरे नहीं डिअर ! इसकी कोई जरूरत नहीं है ! यूँ समझो कि ये तुम्हारे लिए दीपावाली गिफ्ट है मेरी तरफ से !"

"मगर सर"

मनोज ने कुछ कहना चाहा, मगर अनिमेष ने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा - " नहीं डिअर ! कोई अगर-मगर नहीं! ये रूपये तुम्हारी सैलरी से नहीं कटेंगे ! जाओ जाकर धूमधाम से अपने परिवार के साथ त्यौहार मनाओ !"

" थैंक यू सर ! " कहते हुए मनोज का चेहरा खिल उठा था ।

###

करीब आधे घंटे बाद....

अनीमेष और मनोज दोनों अनिमेष की व्हाइट बीएमडब्ल्यू कार में उस होटल से निकल चुके थे मनोज कार ड्राइव कर रहा था और अनिमेष भी पीछे ना बैठकर आगे उसके बगल वाली सीट पर ही बैठा हुआ था ।

वैसे यह कोई नई बात नहीं थी, अनिमेष कई बार मनोज के साथ ही आगे बैठ जाया करता था, और हमउम्र होने के वजह से उसका व्यवहार भी मनोज के साथ दोस्ताना और खुला हुआ था ।

और केवल मनोज जी क्या, अनिमेष का व्यवहार अपने साथ काम करने वाले हर छोटे-बड़े आदमी के साथ बहुत दोस्ताना और केयरिंग था । अनिमेष सचमुच बहुत बड़े दिलवाला था । वह ना सिर्फ छोटे से छोटे आदमी से भी बड़ी इज्जत से बात करता था बल्कि गरीबों और जरूरतमंदों की मदद के लिए भी हमेशा तैयार रहता था । अनिमेष स्वभाव से बहुत भावुक था, किसी का दुख, तकलीफ, परेशानी उससे देखी नहीं जाती थी, और वह बिना आगे-पीछे सोचे

ही उसकी मदद करने के लिए तैयार हो जाता था ।

आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ था कि कोई उससे मदद मांगने आया हो, और उसने मना की हो ! कोई रुपया-पैसा मांगता तो उसे वह मिल जाता था और कोई नौकरी मांगता तो उसे नौकरी मिल जाती थी। और कई बार तो बिना मांगे ही मिल जाती थी, जैसे कि मनोज को मिली थी।

आज से करीब छः महीने पहले जब अनिमेष एक रोड के कॉन्ट्रैक्ट के चक्कर में बिजनौर आया था और वहाँ के एक होटल में रुका था तब
वहां पर उसे मनोज रूम अटेंडेंट के रूप में काम करते हुए मिला था ।

मगर उसकी बातचीत और तौर-तरीके से अनिमेष उसे देखते ही समझ गया था कि यह पढ़ा लिखा काबिल बंदा है । और फिर अनिमेष ने उसे अपने पास बुलाया और उससे बात की जिससे यह पता लगा कि वह ग्रेजुएशन करे हुए है मगर कोई और काम ना मिलने की वजह से मजबूरी में यहाँ यह नौकरी कर रहा है। अनिमेष को तब अपने लिए एक ड्राइवर की जरूरत भी थी, तो उसने तुरंत मनोज से पूछा था - " कार चला लोगे ? "

और मनोज के हां कहते ही अनिमेष ने तुरंत उसे अपना ड्राइवर रख लिया था ।

तब से मनोज ज्यादातर अनिमेष के साथ ही रहता था, और उन दोनो का रिश्ता भी नौकर मालिक से ज्यादा, दोस्ताना ही था।

उसी रिश्ते से अब मनोज कार ड्राइव करते हुए अनिमेष से पूछ रहा था - " वैसे सर ! आप आज देहरादून क्यों जा रहे हैं ?"

इस पर अनिमेष ने कहा -" अब तुमसे क्या छुपाना मनोज डिअर ! देहरादून मैं तुम्हारी होने वाली मेमसाहब से मिलने जा रहा हूँ। "

" क्या बात कर रहें हैं साहब ? " मनोज खुशी से चहकते हुए बोला- " तो क्या मेमसाहब देहरादून में रहती हैं ? "

'हाँ !"

मनोज ने उत्सुकता से आगे पूछा - " तो फिर आपकी उनसे मुलाकात कैसे हुई ? "

" अरे मनोज डिअर ! मैं भी तो देहरादून में ही रहकर पढ़ा हूँ !"

अनिमेष ने मस्ती भरे अंदाज में कहा- " वहीं पर मैं एक बार अपने लिए कुछ कपड़े वगैरह लेने मार्किट गया था, तब मोनिका भी अपनी एक सहेली के साथ वहां घूम रही थी..."

" तो मेमसाहब का नाम मोनिका है ? "

" हां! "

" फिर क्या हुआ सर ! आपकी उनसे बात कैसे हुई ? बताइये ना ! "

"बड़ी मजेदार कहानी है."

'सुनाइये ना ! "

" तो सुनो डिअर ! " अनिमेष जैसे ख्यालों में खोता हुआ बोला- " हुआ यूं कि मैं जिस शोरूम पर अपने लिए कपड़े देख रहा था मोनिका भी अपनी सहेली के साथ उसी शोरूम पर अपने लिए कुछ लेडीज ड्रेस देख रही थी। खास बात यह थी कि मोनिका और उसकी सहेली ने बहुत साधारण कपड़े पहन रखे थे मगर वे अपने लिए मंहगी फैशनेबल ड्रेस देख रहीं थीं, लेकिन सिर्फ देख ही रहीं थीं ।"

"मतलब सर ?"

मतलब वो ड्रेस शायद उनकी रेंज से बाहर थीं इसलिए वे बस उन्हें देखकर ही अपना मन बहला रहीं थीं और खुश हो रहीं थीं। और उन्हें वहाँ देखकर मैं भी बहुत खुश हो रहा था खासतौर से मोनिका को
देखकर । क्योंकि वह है ही इतनी खूबसूरत ! और उस दिन उन साधारण कपड़ों में भी क्या कमाल लग रही थी वह ! मेरी तो उस पर से नजर ही नहीं हट रही थी। "

" फिर ?"

" वे दोनो बहुत देर तक वहां तरह-तरह की ड्रेस देख कर खुश होती रहीं और मैं उन्हें देखकर खुश होता रहा । मगर ड्रेस उन्हें लेनी तो थी नहीं तो काफी देर के बाद उन्होंने उनमें से कुछ ड्रेसेज सलेक्ट करके अलग रखवा दी और उस शोरूम वाले से बहाना बनाते हुए बोली कि 'भैया आज पैसे लेकर नहीं आए हैं ! एक-दो दिन बाद आकर ड्रेस ले जाएंगे !"

" फिर ? "

"फिर क्या ? वह शोरूम वाला भड़क गया और मोनिका और उसकी सहेली को उल्टा सीधा बोलने लगा । कहने लगा कि जब पैसे नहीं थे तो यहाँ मुँह उठाकर अंदर कैसे चलीं आयीं ? इतनी देर से पागल क्यों बना रहीं थीं? मैं पहले ही समझ गया था इन कपड़ो को खरीदने की तुम्हारी हैसियत नहीं है ! और पता नहीं क्या-क्या ?"

"अरे ! फिर ? "

" फिर क्या उस शोरूम वाले की जली कटी बातें सुनकर मोनिका और उसकी सहेली के चेहरे का रंग उड़ गया था, वे दोनो जैसे रोने को तैयार थीं। "

"फिर ? "

"फिर मैंने उनके बीच में दखल दिया और उस शोरूम वाले से कहा कि इन लड़कियों के सलेक्ट किये ड्रेसेज का पेमेंट मैं करूंगा ! तुम्हें इनसे कुछ कहने की जरूरत नहीं है। "

"अच्छा ? फिर क्या हुआ सर ? क्या वे लड़कियां इसके लिए मान गयीं ? "

"नहीं ! मान तो नहीं रहीं थीं! मगर मैंने जिद करके उन्हें मना लिया और उनकी सलेक्ट की हुई उन ड्रेसेज का पेमेंट करके वो ड्रेसेज उन्हें दिला दीं । "

"" अरे वाह ! तब तो वे आपको मान गयीं होंगी ! "

"हाँ! फिर हमारे बीच में बातें हुईं और दोस्ती हो गयी और हम तीनो एक साथ ही उस शोरूम से बाहर निकले और फिर मैंने उन्हें वहीं पास के एक रेस्टोरेंट में अपने साथ लंच भी करवाया !"

"फिर ? "

" फिर हम लोग एक दूसरे के साथ काफी फ्रेंडली हो गये। मैं उन्हें अपने बारे में बताने लगा और वो मुझे अपने बारे! और तब मुझे पता चला कि मोनिका और उसकी वह सहेली गीता अनाथ है और वे दोनो देहरादून के एक अनाथ आश्रम में ही पली-बढ़ी हैं, और फिलहाल जैसे-तैसे अपनी पढ़ाई कर रहीं हैं ! "

"तब मुझे समझ में आया कि वे उन कपड़ो को देखकर इतना खुश क्यों हो रहीं थीं? शायद वैसे कपड़े उन्हें आजतक पहनने को नहीं मिलें होंगे ! "

"फिर ? "

"यह जानकर मुझे उनसे और हमदर्दी हो गयी और

मोनिका... उससे तो मुझे उसी दिन से गहरा लगाव हो गया था ।"

अनिमेष ने कुछ रुककर आगे कहा- "क्योंकि मोनिका में वह सबकुछ था जो मुझे चाहिए था, उसका वो गजब का रूप, वो आंखों की चमक, बातों की खनक और उसका वो अदा से बार- बार अपने बालों को झटकना किसी को भी अपना दीवाना बना सकता था। और ऊपर से उसका अनाथ होना, और उसके बावजूद इतना संघर्ष करना, मेरे दिल में उसके लिए हमदर्दी का तूफान खड़ा कर रहा था, और उधर मोनिका भी मेरी तरफ आकर्षित थी, जिसकी परिणीति हुई मेरे और उसके प्यार में !"

"फिर ? "

" मैंने उसी दिन से मोनिका के साथ-साथ उसकी उस सहेली गीता का भी जिम्मा उठा लिया । उस समय उन दोनो ने जैसे-तैसे इंटर कर लिया था मगर ग्रेजुएशन में रेगुलर एडमिशन लेने में असमर्थ थीं इसलिए प्राइवेट फॉर्म भरने की सोच रहीं थीं, जबकि मैं तब अपने कॉलेज के 2nd ईयर में आया था। फिर मैंने ही उन्हें देहरादून के ही एक कॉलेज में रेगुलर एडमिशन दिलाया और उनके रहने के लिए भी एक गर्ल्स

हॉस्टल में व्यवस्था कर दी और उनकी पढ़ाई-लिखाई और रहन-सहन का सारा खर्च उठाने लगा ! "

"मगर सर ! चलिए मोनिका मेमसाहब का तो समझ में आता है कि आपको उनसे प्यार हो गया था, मगर आपने उनकी उस सहेली का खर्चा क्यों उठाया ? "

" क्यों नहीं उठाता ? " अनिमेष ने उल्टा सवाल करते हुए कहा- " अरे मनोज डिअर मैं अगर मोनिका को प्यार नहीं भी करता या उसे बिल्कुल पसंद भी नहीं करता तब भी... तब भी उसका और उसकी सहेली का खर्चा जरूर उठाता !"

" यह बात कुछ समझ में नहीं आयी सर ? "

"इस बात को समझने के लिए तुम्हें मेरे एक सवाल का जवाब देना पड़ेगा डिअर ! '

" पूछिये सर ! "

अच्छा तो यह बताओ कि मैं यानि कि अनिमेष सिंह ही करोड़ो की इस कंपनी की मालकिन गायत्री देवी के यहाँ

उनका इकलौता बेटा बनकर पैदा क्यों हुआ ?"

"अरे ! यह आप कैसी बात कर रहें हैं सर ? कौन किसके यहाँ पैदा होता है यह तो अपनी-अपनी किस्मत है। यह सब तो भगवान के हाथ में है !"

"तो फिर चलो यह पूछो कि उस भगवान ने मुझे इस करोड़ो की दौलत का इकलौता वारिस बनाकर पैदा क्यों किया ?"

" क्यों किया?"

'ताकि मैं इस दौलत से जरूरतमंदों की मदद कर सकूं, इसे उन तक पहुंचा सकूं जिन्हें इसकी जरूरत है ! और मैं तो बस यहीं कर रहा हूँ। इसलिए जब भी मुझे ऐसा कोई मिलता है जिसकी मदद मैं कर सकता हूँ तो जरूर करता हूँ ! "

"इसलिये मैंने ना सिर्फ मोनिका और उसकी सहेली गीता का खर्चा उठाया बल्कि मैं उस अनाथ आश्रम को भी रेगुलर डोनेशन देने लगा जिसमें वे दोनों पली-बढ़ी थीं।"

"फिर ? "

" फिर मोनिका की वो सहेली गीता तो अपनी ग्रेजुएशन पूरी करने के अपनी पसंद के एक लड़के से शादी करके सेटल हो गईं, जबकि मैं ग्रेजुएशन के बाद वहीं से MBA करके मम्मी के पास दिल्ली लौट आया और पिछले दो साल से उनके कंपनी के कारोबार में हाथ बटा रहा हूँ।"

"और मोनिका मेमसाहब ? "

" उसे तो मैने ग्रेजुएशन के बाद MBA भी करवा दिया है और वह अभी भी उसी होस्टल में रह रही है। "

" तो अब आपने क्या सोचा है ? '

' सोचना क्या है डिअर ? अब बस मोनिका से शादी करनी है और फिर... कंपनी का सारा काम मैं और मोनिका मिलकर संभालेंगे और मम्मी... बस आराम करेंगी ! "

'मगर सर ! क्या मैडम जी से आपकी इस बारे में बात हो गयी है ? "

'पूरी बात तो नहीं हुई है मनोज डिअर ! मगर मैंने उन्हें थोड़ा

हिंट दे दिया है और यह कहा है कि इस दीपावाली पर मैं उन्हें किसी खास से मिलवाने वाला हूँ ! और इसीलिए तो मैं देहरादून जा रहा हूँ ! उधर से मोनिका को अपने साथ ही लेकर आऊंगा मम्मी से मिलाने के लिए ! "

'अरे वाह सर ! मगर मैडम जी मान तो जायेंगी ना ! "

"अरे मानेंगी क्यों नहीं? ऐसा क्यों बोल रहो हो डिअर ? "

"क्योंकि मैडम जी बहुत कड़क हैं !"

"अरे नहीं डिअर ! कड़क वो सिर्फ ऊपर से हैं मगर अंदर से तो एकदम मख्खन हैं मख्खन ! और वैसे भी उन्होंने आज तक मेरी कोई बात नहीं टाली है तो इसे भी नहीं टालेंगी ! और फिर आधी बात तो उनके मोनिका को देखते ही बन जायेगी, मोनिका है ही इतनी सुंदर
अभी अनिमेष ने यह कहा ही था कि उसके मोबाइल फोन की रिंग बजने लगी। उसने अपना फोन निकाल कर चेक किया और फोन की स्क्रीन पर फ़्लैश हो रहे मोनिका के नाम को देखकर मुस्कुरा उठा और जोश में भर कर बोला - " लो आ गया तुम्हारी मेमसाहब का फ़ोन ! कसम से बड़ी लंबी उम्र है!"

उसकी यह बात सुनकर मनोज भी मुस्कुरा उठा जबकि अनिमेष ने फोन रिसीव करते हुए कहा- "हैलो ! हाँ मोनिका डिअर ! कैसी हो ?'

दूसरी तरफ से मोनिका ने अपनी सुरीली आवाज में कहा- "मैं तो ठीक हूँ मगर यह बताओ कि तुम कहाँ हो और कब तक आओगे ? "

बस यहाँ से चल पड़ा हूँ डिअर ! अपनी मंजिल की तरफ, यानी कि तुम्हारी तरफ ! बस दोपहर तक पहुंच जाऊंगा!"

'दोपहर तक क्यों ? थोड़ा पहले नहीं निकल सकते थे ? "मोनिका ने शिकायत करते हुए कहा तो अनिमेष उसे मनाते हुए बोला- " अरे तो अभी कौनसी देर हुई है यार ? बस अभी घंटे डेढ़ घंटे में तुम्हारे पास पहुंच जायेंगे और फिर...."

"फिर ?"

'सबसे पहले साथ में लंच करेंगे! फिर कहीं घूमने चलेंगे और फिर कल मैं तुम्हें अपनी मम्मी से मिलाने ले चलूँगा ! "

"अच्छा ठीक है ! आ जाओ ! मैं तुम्हारा वेट कर रहीं हूँ ! बॉय ! "

" बॉय डिअर ! " कहकर अनिमेष ने फोन काट दिया।

तब तक वे हरिद्वार के पास पहुच चुके थे। और उनके सामने से आती एक बस को देख कर मनोज जोश मे भरकर बोला-"वह देखिये सर!बीजनौर की बस आ रही है। मैं इसी में बैठकर निकल जाता हूँ! " कहने के साथ ही मनोज ने उस बस को रुकने के लिए हाथ दिया था ।"

"हाँ-हाँ तुम निकल जाओ डिअर ! " अनिमेष ने भी कहा ।

और फिर मनोज ने कार साइड में रोक दी और ड्राइवर सीट छोड़कर बाहर निकल गया जबकि अनिमेष भी अपनी साइड से बाहर निकलकर घूमकर ड्राइवर सीट की तरफ आ गया और ड्राइवर सीट पर बैठ गया ।

मनोज जाने से पहले एक बार फिर उसका अभिवादन करते हुए बोला- "ठीक है सर ! मैं चलता हूँ! आप जरा आराम से जाइयेगा ! "

" अरे हां - हां मनोज डिअर ! तुम चिंता मत करो ! " अनिमेष ने विश्वास भरे स्वर में कहा-"तुम जाओ ! मैं आराम से ही जाऊंगा !"

###
अनिमेष मनोज को वहीं छोड़कर देहरादून जाने के लिए आगे बढ़ गया था। अभी वह थोड़ी दूर ही चला था कि उसका मोबाइल फिर से बजने लगा। उसने कार चलाते ही चलाते अपना मोबाइल फोन निकाला और एक नजर उस पर डालते हुए बुदबुदाया- "मम्मी का फोन है ! "

और फिर कार ड्राइव करते हुए ही उसने फोन रिसीव करके अपने कान से लगा दिया और बोला - " हैलो मम्मी डिअर ! गुड मॉर्निंग ! "

दूसरी तरफ से गायत्री देवी की ममता में डूबी आवाज आयी - "गुड़ मॉर्निंग बेटे ! तू ठीक है! "

" हां मम्मी ! बिल्कुल फाइन हूँ ! "

" अच्छा ! तो कहाँ है अभी? हरिद्वार से निकला या नहीं ? "

" हाँ मम्मी! निकल तो गया हूँ ! लेकिन देहरादून के लिए! "

" देहरादून ? अब देहरादून क्यों जा रहा है? तुझे तो आज घर आना था ना !"

" अरे कल आ जाऊंगा ना मम्मी ! "

"मगर देहरादून क्या करने जा रहा है ? "

"एक बहुत जरूरी और खास काम से जा रहा।"

"अरे मगर बता तो सही ! अचानक ऐसा कौनसा काम आ गया तुझे देहरादून में ? "

" मैंने आपको बताया था ना मम्मी कि मुझे आपको किसी से मिलवाना है! "

" अच्छा ! तो वो लड़की देहरादून की है! "

'हाँ मम्मी डिअर ! और मैं जा रहा हूँ उसे वहां से लेने, आपसे

मिलवाने के लिए !"

"अरे उससे कभी और मिलवा देना बेटा! अभी तो दीपावाली का त्यौहार है। तू पहले घर आजा !"

"नहीं मम्मी डिअर ! अब तो मैं उसे कल अपने साथ ही लेकर आऊंगा!"

"मगर बेटे"

"अगर-मगर कुछ नहीं मम्मी! मैं अब निकल चुका हूँ और रास्ते में हूँ !"

"अच्छा तो तेरा ड्राइवर मनोज तो है ना तेरे साथ !"

"नहीं मम्मी! उसे तो मैंने घर भेज दिया !"

"घर भेज दिया ? अरे तो फिर कार कौन चला रहा है ?"

"कार तो मैं ही खुद ही चला रहा हूँ मम्मी!"

'त-तू खुद चला रहा है ? "

" हां तो उसमें क्या हो गया ?" अनिमेष ने लापरवाही से कहने के साथ एक नजर बाहर की तरफ डाली। वह अब इस समय गंगा जी पर बने एक पुल के ऊपर से गुजर रहा था । गंगा जी में इस समय भरपूर जल था और उनका प्रवाह भी तेज लग रहा था। यह देखकर अनिमेष के मुँह से निकला " जय गंगा मैया ! "

तभी अनिमेष ने एक नजर अपनी कार के बैक व्यू मिरर पर पड़ी, उसके पीछे एक ट्रक बहुत तेज गति से आ रहा था। मगर अनिमेष ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया, वह अपनी साइड में आराम से चल रहा था और इस समय ठीक गंगा जी के ऊपर से होकर गुजर रहा था।

जबकि फोन पर दूसरी तरफ उसकी मां गायत्री देवी उस पर नाराज होते हुए कह रहीं थीं -'तू खुद कार ड्राइव कर रहा है ! और... ड्राइविंग करते हुए फोन पर बात भी कर रहा है !"

" अरे डोंट वरी मम्मी डिअर ! " अनिमेष ने फिरसे लापरवाही भरे स्वर में कहा - "कोई प्रॉब्लम नहीं है ! आई एम एन एक्सपर्ट ड्राइवर

***

अभी अनिमेष ने ये शब्द कहे ही थे कि उसकी नजर एकबार फिर अपने बैक व्यू मिरर पर गयी। उसके पीछे तेजी से आता ट्रक बहुत तेजी से अनियंत्रित गति से उसकी कार की तरफ लपका था जिसे देखते ही अनिमेष के होश उड़ गये और उसके मुँह से भय और हैरत
में डूबे शब्द निकले - " अरे यह क्या ?"

दूसरी तरफ से गायत्री देवी चिल्लाई " क्या हुआ बेटे ? क्या हुआ ? "

और तभी

""भड़ाक ! ""

ट्रक ने पूरी स्पीड से कार को टक्कर मारी थी जिससे अनिमेष की कार किसी खिलौने की तरह में उछलकर पुल की रेलिंग की तोड़ती हुई नीचे गंगा जी में जा रही थी।

पुल से कार समेत नीचे गिरता अनिमेष पूरी ताकत से चिल्लाया था - " मम्मी...! "

दूसरी तरफ से गायत्री देवी भी चिल्लाई थी- " अनिमेष बेटे क्या हुआ !

मगर

कार तब तक गंगा नदी में जा गिरी थी और गंगा जी में बह गयी थी।

गायत्री देवी उधर से चिल्लाती ही रह गयीं थीं मगर... उनकी खुशियां लुट चुकी थीं।

गंगा जी बही वह कार तो अगले दिन बरामद हो गयी थी मगर अनिमेष का कुछ पता नहीं चला था। उसकी लाश तक नहीं मिली थी।

क्रमशः

###

क्या अनिमेष सचमुच मार चुका है ?

अगर हाँ तो गायत्री देवी का क्या होगा?

और मोनिका का क्या होगा ?

और उनके करोड़ो के कारोबार का क्या होगा ?

पढिये प्रेम और भावनाओं में डूबी एक हैरतअंगेज कहानी - 'वरदान के अगले भाग में'